● **सुनो, समझो और बताओ :**

३. आँखें मूँदो नानी

-डॉ. दिविक रमेश

जन्म : ६ फरवरी १९४६, किराड़ी, दिल्ली **परिचय :** आपने बच्चों के भावविश्व से संबंधित अनेक पुस्तकें लिखी हैं । **रचनाएँ :** बालनाट्य, कविता संग्रह, काव्यनाटक, बालसाहित्य, एवं अनूदित रचनाएँ ।

प्रस्तुत कहानी में बताया गया है कि छोटे-छोटे बच्चे भी प्रतिभावान होते हैं । कल्पना के पंख लगाकर वे भी ऊँची उड़ान भर सकते हैं ।

खोजबीन

किसी प्रसिद्ध्‍ध कारटूनिस्ट की जानकारी प्राप्त करो ।

59UEYV

डोलू ने हँसकर कहा, ''नानी, आप चाहें तो मैं पहाड़ ला सकती हूँ ।''

उसकी बात सुनकर नानी चौंकी । सोचने लगी, 'अरे ! यह लड़की है कि तूफान, पता नहीं इसके दिमाग में क्या चल रहा है ।' फिर बोलीं, ''लेकिन कैसे? क्या तुम्हारी कोई परी दोस्त है, जो मदद करेगी?''

''हाँ नानी ! है न मेरी परी दोस्त । एक नहीं, कई ।''

''अच्छा!'' नानी ने आश्चर्य से आँखें फैलाईं ''पर तुझपर विश्वास कौन करेगा? कंप्यूटर के इस जमाने में किस तरह की बातें कर रही हो?''

'' नानी, आप तो मेरी बात मानती ही नहीं । मुझे परियाँ अच्छी लगती हैं । वे मेरी दोस्त हैं ।''

''अच्छा, क्या तुम्हारी परी पहाड़ उठा सकती है?'' नानी ने बात टालने की नीयत से पूछा ।

''हाँ, हाँ ।''

''पर परी तो कोमल होती है ।''

''हो सकती है, पर उसमें ताकत बहुत है । वह बहुत कुछ कर सकती है । एक बार मैंने परी दोस्त से कहा कि धरती पर खड़ी-खड़ी तारा छुओ । परी ने मुझे गोद में उठाया और लंबी, और-और लंबी, और-और-और-और लंबी होती चली गई और पहुँच गए हम तारे के पास । मैंने तो खूब-खूब छुआ तारे को । उनके साथ खेली भी ।''

नानी को लगा कि कहीं डोलू की बात सच तो नहीं है । पूछा, ''और क्या-क्या था तारे पर ?''

डोलू को इस बार नानी की बात अच्छी लगी । उसने उत्साह से जवाब दिया, ''तारे पर बड़े ही लंबे-लंबे बच्चे थे, बाँस जैसे ! नीचे खड़े-खड़े ही पहली मंजिल की छत से सामान उतार सकते थे । इससे भी मजेदार बात यह है कि उनके माता-पिता कद में बौने थे ।''

❑ उचित आरोह-अवरोह के साथ कहानी के एक-एक परिच्छेद का वाचन करें । कुछ विद्यार्थियों द्वारा उसी परिच्छेद का मुखर वाचन कराएँ । कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा पूरी कहानी का मौन वाचन कराके कहानी के आशय पर चर्चा करवाएँ ।

स्वयं अध्ययन

सह्याद्रि से निकलने वाली नदियों की सूची बनाओ ।

''एँ!'' नानी इस बार सचमुच चौंक गई थीं ।

''हाँ, मुझे भी अचरज हुआ था नानी । परी दोस्त ने बताया कि तारे की धरती और हमारी धरती में अंतर है । तारे की धरती पर आयु बढ़ने के साथ कद छोटा होता है, धरती पर बड़ा ।''

''और क्या वह बोलती भी थी? तूने बात की?'' नानी ने पूछा ।

''हाँ-हाँ नानी, खूब बातें की, पर मैं आपको बताऊँगी नहीं। अरे, मैंने तो परी को नदी उठाकर, आसमान में उड़ते भी देखा है । '' डोलू ने बताया ।

''नदी को उठाकर ! और पानी ?''

'' अरी नानी, पानी समेत । बिलकुल लहराते लंबे कपड़े-सी लग रही थी । कितना मजा आया था ।''

नानी को डोलू की बात पर विश्वास तो नहीं हो रहा था पर मजा बहुत आ रहा था । नानी बोली ''अच्छा डोलू ! तू तो हर रोज ही परी से मिलती है, परी कभी थकती भी है कि नहीं ?''

'' थकती है न नानी । जब कोई उसपर विश्वास नहीं करता, जब कोई उससे उबाऊ बातें करता है, तो बहुत थक जाती है ।''

''सुनो नानी,'' एक बार मुसकराते हुए परी ने कहा-''चलो आज तुम्हें पूरा जंगल निगलकर दिखाती हूँ।'' सुनकर मुझे कुछ-कुछ अविश्वास हुआ । जाने क्यों देखते-ही-देखते परी का मुँह उतरने लगा । उदासी छाने लगी । मैंने झट से अपनी गलती समझी । परी पर विश्वास किया । परी के मुँह पर खुशी लौट आई । वह मुझे जंगल के पास ले गई । परी ने देखते-ही-देखते पूरा जंगल निगल लिया । मैं तो अचरज से भरी थी। मैंने पूछा, ''तुम्हारे पेट में जंगल क्या कर रहा है?'' परी बोली- ''लो, तुम ही देख लो और सुन भी लो ।'' परी ने आँख जैसा कोई यंत्र मेरी आँखों पर लगा दिया । यह क्या ! मैं तो उछल ही पड़ी थी । परी के पेट में पूरा का

पूरा जंगल दिख रहा था । पेड़ हिल रहे थे । जानवर घूम रहे थे । पक्षी बोल रहे थे । नदी बह रही थी । मैंने पूछा- ''परी, यह जंगल अब क्या तुम्हारे पेट में ही रहेगा ?''

परी बोली-''नहीं-नहीं, मैंने तो बस तुम्हें चकित करने के लिए जंगल निगला था । जंगल तो मेरा दोस्त है, बल्कि सभी का दोस्त है । क्या-क्या नहीं देता जंगल आदमी को । अगर जंगल खत्म हो जाए तो सभी का जीना ही दूभर हो जाए ।'' ''नानी, परी तो अपनी आँखों में पूरा समुद्र भी भर सकती है, मछलियों और जीव-जंतुओं समेत । बिलकुल मत्स्य जैसी लगती हैं तब परी की आँखें । एक बार तो सारे बादल ही पकड़कर अपने बालों में भर लिए थे । पर थोड़ी ही देर में परी ने उन्हें छोड़ भी दिया । अगर उन्हें पकड़े रखती तो बारिश कैसे होती ? बारिश न होती तो पूरी धरती को कितना दुख पहुँचता ? परी कहती है कि हमेशा हमें पूरी धरती के हित के लिए प्रयत्न करना चाहिए । नानी कहीं आप झूठ तो नहीं समझ रहीं?''

❑ कहानी में आए मुहावरों के अर्थ पूछकर वाक्य में प्रयोग करने के लिए कहें । (चौंक पड़ना, सिर सहलाना आदि की कृतियाँ कराएँ ।)

जरा सोचो तो ... बताओ

यदि आपको परियों जैसे पंख आ जाएँ तो .....

नानी जरा सँभली । आँखें मसलीं । सिर को भी सहलाया । बोलीं, ''नहीं-नहीं, डोलू । जब ऐसे विस्मित करने वाले कारनामे अपनी आँखों से देखूँगी तो कितना मजा आएगा । सच, मैं तो अविश्वास की बात मन में लाऊँगी तक नहीं ।''

''हाँ-हाँ, मैं परी से आपको मिला दूँगी !'' डोलू की आवाज में गजब का विश्वास था । ''पर पहले यह तो बताओ कि मैं पहाड़ लाकर दिखाऊँ ?''

''अच्छा, दिखा । सँभालकर, चोट न लगे तुझे,'' नानी ने बच्चों की तरह कहा ।

''तो फिर आँखें मूँदो । मैं अभी आई पहाड़ लेकर ।''

नानी ने आँखें मूँद लीं । बच्ची जो बन गई थीं। डोलू थोड़ी ही देर में पहाड़ लेकर आ गई, बोली, ''नानी आँखें खोलो और देखो यह पहाड़ ।'' नानी ने आँखें खोल दीं । पूछा, ''कहाँ ?''

''यहाँ । यह क्या है ?''

''पहाड़ !''

अब क्या था, दोनों खूब हँसीं, खूब हँसीं । नानी ने डोलू को खींचकर उसका माथा चूम लिया । प्यार से बोलीं, ''तुम सचमुच बहुत नटखट हो डोलू !''

नानी ने अब डोलू से मुसकराते हुए पूछा, ''भई डोलू, अपनी परी दोस्त से भला कब मिलवाओगी ?''

''कहो तो अभी ।''

''ठीक है । मिलाओ ।''

''तो करो आँखें बंद । ''

नानी ने आँखें मूँद लीं । थोड़ी ही देर में डोलू ने कहा, ''नानी आँखें खोलो । '' नानी ने आँखें खोल दीं । पूछा, ''कहाँ है परी ?''

''यह कौन है ?''

''परी ।'' नानी ने कहा ।

क्योंकि डोलू परी जैसे पंख लगाकर सामने खड़ी थी ।

दोनों फिर खूब हँसीं, खूब हँसीं । उसने अपनी ही फ्रॉक पर कागज लगा रखा था जिसपर लिखा था-'परी' ।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

नीयत = भाव, उद्देश्य

बौना = छोटे कद का, नाटा

कारनामा = कोई बड़ा कार्य

गजब = विलक्षण, कमाल

अध्ययन कौशल

किसी अन्य कहानी लेखन के मुद्दे तैयार करो ।

विचार मंथन

।। साइकिल चलाओ, पर्यावरण बचाओ ।।

सदैव ध्यान में रखो

सजीव सृष्टि की रक्षा करना आवश्यक है ।

सुनो तो जरा

अपनी मनपसंद कारटून कथा सुनकर हाव-भाव सहित सुनाओ ।

बताओ तो सही

अपनी दादी/नानी के साथ घटी कोई मजेदार घटना बताओ ।

वाचन जगत से

ध्रुवतारा से संबंधित बालक ध्रुव की कहानी पढ़ो एवं सुनाओ ।

मेरी कलम से

'बाँस' किस-किस जगह उपयोग में लाया जाता है, लिखो ।

* एक वाक्य में उत्तर लिखो ।

१. डोलू की कौन-सी बात सुनकर नानी चौंकी ?
२. डोलू ने परी दोस्त से एक बार क्या कहा ?
३. तारे पर कैसे बच्चे थे ?
४. परी कब थक जाती है ?
५. डोलू अचरज से क्यों भर गई ?
६. नानी को किस बात में मजा आएगा ?

भाषा की ओर

'खो-खो' इस खेल के चित्र में दी गई मात्राओं के आधार पर बारहखड़ी का उपयोग कर नीचे दिए गए रिक्त स्थानों में अपने मित्रों के नाम लिखो :

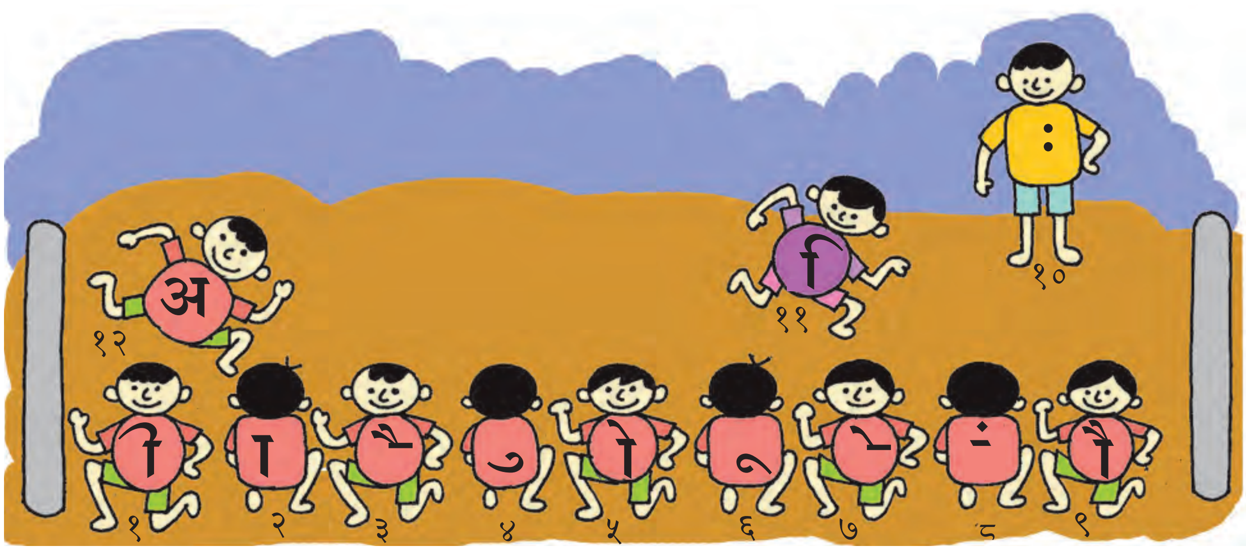

१) सातवें क्रमांक पर कौन बैठा है ?
२) सातवें क्रमांक की बाईं ओर .... है ।
३) सातवें क्रमांक के सामने .... भाग रहा है ।
४) प्रथम क्रमांक पर .... है ।
५) तीसरे क्रमांक के दाईं ओर के पाँचवें क्रमांक पर .... है ।
६) दसवें क्रमांक पर .... खड़ा है ।
७) चौथे क्रमांक के दाईं ओर .... है ।
८) पाँचवें क्रमांक के बाईं ओर .... है ।
९) दूसरे क्रमांक के दाईं ओर .... है ।
१०) छठे क्रमांक के बाईं ओर के चौथे क्रमांक पर .... है ।
११) सातवें क्रमांक के दाईं ओर के दूसरे क्रमांक पर .... है ।
१२) ग्यारहवें क्रमांक के पीछे .... भाग रहा है ।